चाहिएँ-(१) काव्य की पूर्णता का द्योतक, लघु प्रसारगामी, सरल तथा आकस्मिक।
डा० जगन्नाथ शर्मा ने लिखा है कि-"जितना भी विवरण कहानी में प्रसारित रहता है उसका सारा सौन्दर्य पूँजीभूत होकर अन्त में आकर एक विशेष प्रकार की संवेदनशीलता को स्फुरित करता है। सिद्धान्त की दृष्टि से इसी को प्रभावान्विति और समष्टि प्रभाव माना है।" कहानी का चरम सौन्दर्य उसके अन्त में निहित रहता है, अतः यह कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। जैसा कि एक आलोचक ने लिखा है कि--"कहानी का डङ्क उसकी पूँछ में चमकता है जिस प्रकार बिच्छू का डङ्क उसकी पूँछ में होता है ठीक उसी प्रकार कहानी का सारा रहस्य, उसका समस्त प्रभाव उसके अन्त में निहित रहता है।"

शीर्षक--कहानी का शीर्षक औत्सुक्योत्पादक, लघु और नवीन होना चाहिए। डा० जगन्नाथ शर्मा ने लिखा है कि--"शीर्षक में प्रतिपाद्य बोधकता अनिवार्य है।" इसी प्रकार चार्ल्स बैरेट ने लिखा है कि--"शीर्षक विषयानुकूल, निश्चयबोधक, आकर्षक नवीन एवं लघु हो"--A good title is apt, specific, attractive and new and short. कहानी शीर्षक निश्चित रूप से अच्छा होना चाहिए। "शीर्षक वही अच्छा होता है जो कहानी की प्रकृति के अनुरूप हो।"Keep the title in the proper proportion to the nature and interest of the story. (मेकानोची)

कहानी के शीर्षक अनेक प्रकार के हो सकते हैं--

(१) भावात्मक उदाहरणार्थ व्रतभंग, अवलम्ब।
(२) तथ्योद्बोधक " एक गौ, डाकू
(३) ऐतिहासिक " स्वर्ग के खण्डहर
(४) नामवाची " काबुलीवाला
(५) सम्बन्धवादी " जीजी, माँ।

इसी प्रकार कुछ शीर्षक--

अ. एक शब्द वाले (रोज, शरणागत),
ब. दो शब्द वाले (एथेन्स का सत्यार्थी, शतरंज के खिलाड़ी),
स. वाक्यात्मक (दुखवा मैं कासे कहूँ मोरी सजनी) हैं।

किन्तु शीर्षक का कथावस्तु से सम्बन्ध होना चाहिए, बनावट तथा अस्वाभाविकता उसमें नहीं होनी चाहिए, क्योंकि शीर्षक की सफलता पर ही कहानी की सफलता निर्भर रहती है।

पात्र और चरित्र-चित्रण--आधुनिक कहानियों में चरित्र-चित्रण को विशेष महत्त्व प्राप्त है। "चरित्र-चित्रण का सम्बन्ध पात्रों से होता है। कहानी के पात्रों की संख्या न्यूनातिन्यून होना वांछनीय है। कहानीकार अपने पात्रों के चरित्र का विकास क्रमबद्ध नहीं करता। वह पूर्वनिर्मित चरित्र के ऐसे अंश पर प्रकाश डालता है जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व झलक उठे। कहानीकार यदि किसी पात्र के चरित्र में परिवर्तन करता है तो एक साथ करता है, क्रमशः नहीं। कहानी के पात्र सजीव और व्यक्तित्व पूर्ण होने चाहिए कहानी के पात्र कल्पना-लोक में जन्म लेकर भी अपने व्यक्तित्व के अनुकूल कार्य-कलाप करते हैं।

चरित्र-चित्रण में सबल और निर्बल दोनों ही वर्गों के चरित्र होने चाहिए। तभी उसमें स्वाभाविकता सुरक्षित रह सकती है। प्रायः कहानी में चरित्र दो प्रकार के होते हैं—वर्गगत और व्यक्तिगत। इनमें भी कोई देवराज होता है तो कोई असुर और कोई मानव।

चरित्र-चित्रण करने की दो शैलियाँ हैं—१ प्रत्यक्ष या विश्लेषणात्मक, २. परोक्ष या अभिनयात्मक। चरित्र-चित्रण करने के निम्नलिखित साधन हैं—१. वर्णन, २. संकेत, ३. कथोपकथन, ४ चेष्टा, ५. विश्लेषण और ६. अन्तर्द्वन्द्व आदि।

कथोपकथन या संवाद—यह तत्व कहानी का प्राण है। संवाद कहानी में चरित्र का चित्रण, वर्णन में रोचकता तथा प्रवाह और कथावस्तु को विकास की ओर ले जाने का कार्य करते हैं। संवाद कहानी को अधिकाधिक संश्लिष्ट बनाते हैं। ये एक विशेष प्रकार के वातावरण का निर्माण करने में समर्थ होते हैं। संवाद कहानी में स्वाभाविकता भी लाते हैं।

सफल संवादों के निम्नलिखित गुण हो सकते हैं—

(१) गतिशील, सरल, लाक्षणिक आकर्षक शब्दावली में लिखित होने चाहिए। (२) वे लघु मार्मिक, स्वाभाविक और यौक्तिक भी होने चाहिए। (३) संवाद पात्र और परिस्थिति के अनुकूल तथा मनोवैज्ञानिक होने चाहिए। (४) हास्य व्यङ्ग्य, मुहावरे और लोकोक्तियों से सम्पन्न संवाद प्रभावशाली होते हैं। (५) संवाद जिज्ञासोत्पादक होने चाहिए। (६) अपने में पूर्ण तथा उद्देश्य या कार्य को प्रकट करने में सफल होने चाहिए। (७) संवादों की प्रकृति ऐसी होनी चाहिए कि वे सक्रियता और सजीवता के साथ-साथ कहानी में एक अनिर्वचनीय सौन्दर्य-विधान करने की क्षमता रखने वाले हों। (८) कहानी के संवादों में स्वगत-कथन तथा सैद्धांतिक विवेचनों के लिए कोई स्थान नहीं है।

अतः अनेक कहानियाँ बिना संवादों के भी लिखी जा रही हैं, जैसे जोशी की 'प्लेनचेट' कहानी। आज भी साहित्य में नये-नये प्रयोग हो रहे हैं।

वातावरण—देशकाल—"कहानी में सजीवता और स्वाभाविकता लाने वाले तत्वों में वातावरण का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। वातावरण से विरहित कहानी ठीक उसी तरह प्रभावहीन लगेगी, जिस प्रकार दुष्यन्त और शकुन्तला का अभिनय करने वाले पात्र का नग्न रंगमंच पर दैनिक वस्त्रों में अभिनय करना लेशमात्र भी प्रभावोत्पादक नहीं होता। वातावरण में वास्तव में दर्शक के मस्तिष्क पर पड़ने वाला वह प्रभाव है जो देशकाल और व्यक्ति की पारस्परिक अनुरूपता से उत्पन्न होता है।" इस तत्व के अन्तर्गत कहानी में देशकाल का चित्रण वेशभूषा, साज-सज्जा, रीति-रिवाज, रहन-सहन, आचार-विचार, प्रकृति वर्णन, नगर-वर्णन ऋतु-वर्णन, काल आदि का समावेश होता है।

वातावरण कहानी में (१) हमारी इन्द्रियों को प्रभावित कर उद्दीप्त करता है; (२) वह हमारी सौंदर्यानुभूति की वृत्ति को सन्तुष्ट करता है। (३) वह हमारी सहानुभूति को जाग्रत करता है तथा (४) कहानी में आकर्षण उत्पन्न करता है। उदाहरण के लिए प्रसाद की 'पुरस्कार' कहानी के प्रारम्भ का यह अंश लिया जा सकता है—

"आर्द्रा नक्षत्र आकाश में काले-काले बादलों की घुमड़ जिसमें दुन्दुभी का

Scanned with CamScanner

[illegible] ... एक ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible] ... [illegible]

वातावरण एवं देशकाल के अन्तर्गत ... [illegible] स्वभाव, ... और कार्य की एकता का समावेश होता है । यूनानी एवं ... कहानीकारों ने इनको विशेष महत्व प्रदान किया है किन्तु आज की कहानी में इनका प्रयोग अनिवार्य नहीं माना जाता किन्तु कार्य की एकता का सिद्धान्त आवश्यक है ।

भाषा शैली—कहानी की भाषा वातावरण, पात्र और परिस्थिति के अनुकूल होनी चाहिए । सरल, सरस, व्यावहारिक, स्पष्ट, शुद्ध, प्रतिभायुक्त, प्रवाह तथा ... और भावपूर्ण स्थलों पर चित्रात्मक भाषा कहानी के सौंदर्य की वृद्धि करती है । शैली आकर्षक, हृदय-स्पर्शी और विनोद से युक्त होनी चाहिए । लोकोक्ति एवं मुहावरों से युक्त भाषा-शैली सुन्दर बनाई जाती है ।

आज की कहानी में निम्नलिखित शैलियाँ प्रचलित हैं—

(१) आत्मकथित शैली, इसमें पात्र स्वयं बोलता है ।

(२) ऐतिहासिक या अन्य पुरुषवाचक शैली, यह वर्णनात्मक शैली है ।

(३) संवादात्मक—दो पात्रों के वार्तालाप के द्वारा कहानी लिखी जाती है ।

(४) पत्रात्मक—दो या कई पत्रों के द्वारा लिखी जाती है । इसमें आदि और मध्य पत्र द्वारा तथा अन्त में कहानीकार उपसंहार कर देता है ।

डायरी शैली में—डायरी की भाँति यह कहानी लिखी जाती है । जैसे, प० ... बली प्रसाद वाजपेयी की 'सूखी लकड़ी !'

(५) मिश्र शैली—इस रूप में कई शैलियाँ मिलकर कहानी को पूर्ण करती हैं।

आज की कहानी प्राचीन कहानियों की भाँति एक राजा और रानी की कहानी नहीं है । वह साहित्य की महत्वपूर्ण विधा तथा नाटकीय आख्यान है । अतः उसमें नाटक की-सी सजीवता और कलात्मक अपेक्षित है जो कि शैली की श्रेष्ठता और सफलता पर ही निर्भर है ।

उद्देश्य—साहित्य की प्रत्येक विधा किसी न किसी उद्देश्य या लक्ष्य को लेकर लिखी जाती है । अतः कहानी भी सोद्देश्य ही लिखी जाती है । कहानी का ध्येय केवल मनोरंजन करना ही नहीं है, उसका ध्येय जीवन के तथ्यों का विश्लेषण तथा मानव-मन का निकट से अध्ययन भी है । 'कहानी का उद्देश्य' अधिकांशतः व्यंजित रहता है । कभी-कभी यह उद्देश्य स्पष्ट भी हो जाता है । उसने कहा था, इसमें प्रेम और आदर्श की प्रतिष्ठा की गई है । अलबम (सुदर्शन) में याचक के स्वाभिमान की रक्षा उसका उद्देश्य है । कभी-कभी कहानी का उद्देश्य गूढ भी रहता है । कभी-कभी कहानी का उद्देश्य उसके अन्तिम वाक्य में निहित रहता है । अज्ञेय की कहानी 'शत्रु' का अन्तिम वाक्य—"जीवन की सबसे बड़ी कठिनाई यही है कि हम निरंतर आसानी की ओर आकृष्ट होते रहते हैं ।" कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट करता है ।

कुछ कहानीकार कहानी में उद्देश्य तत्व को विशेष महत्व प्रदान करते हैं और कुछ इसको इतना महत्व नहीं देते । वास्तव में कहानी हमारी समस्याओं को हल नहीं करती अपितु वह मार्ग-दर्शन करती है ।

Scanned with CamScanner